4. भारत में राष्ट्रवाद

Q. राष्ट्रवाद क्या है ?

उत्तर - राष्ट्रवाद का अर्थ है राष्ट्रीय चेतना का उदय। यह एक ऐसी समाजिक परिकल्पना है, जिसमे कोई भी व्यक्ति बिना अपना फायदा देखे अपने देश के प्रति सोचना शुरू कर दे या उसके अन्दर देश के प्रति लगाव उत्पन्न हो जाए तो उसे ही राष्ट्रवाद कहते है।

- जो अपने देश के प्रति सोच और लगाव की भावना का विकास करता है, उसे राष्ट्रवाद कहते है।

- और जिस व्यक्ति में ये भावना पनपती है उसे राष्ट्रवादी कहते है।

★ भारत मे राष्ट्रवाद का उदय के कारण –

Q. भारत मे राष्ट्रवाद का उदय के कारणों का वर्णन करें ?

उत्तर - राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ राष्ट्रीय चेतना का उदय जिसमें राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, बौधिक तथा सांस्कृतिक एकीकरण का अभाव हो।

प्रमुख कारण –

1. राजनितिक - लार्ड लीटन और लार्ड रिपन के काल में राष्ट्रवाद की भावना काफी आगे बढ़ रही थी। **1878 ई० मे वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट** लीटन ने पारित किया था। जिसके तहत भारतीय भाषा मे छपने वाली पत्रिका पर रोक लगा दिया। जबकि अंग्रेजी भाषा में छपने वाली पत्रिका पर रोक नही लगा। इस बात को लेकर भारतीय लोगो ने विरोध किया। 1879 ई० में लीटन के द्वारा शस्त्र अधिनियम पारित किया गया।

जिसके

तहत कहा गया की अगर भारतीय लोग अस्त्र-शस्त्र रखते है तो उन्हे लाइसेंस बनाना होगा। उ अंग्रेजो के लिए ऐसा नियम नही था। इस बात को लेकर जमकर विरोध किया और राष्ट्रभावना का विकास किया।

2. आर्थिक कारण - अंग्रेजों ने भारत में उपनिवेश की आर्थिक निती को अपनाकर भारतीय अर्थव्यवस्था का जमकर शोषण किया। जिससे भारतीय लोग काफी प्रभावित हुए। इनके कुटीर उधोग लगभग समाप्त हो गये और भारतीय अर्थव्यवस्था एकदम चरमरा गयी।

3. समाजिक कारण - अंगेजो ने भारतीय लोगो के साथ काले-गोरे का भेद-भाव किया तथा **1857 के सिपाही विद्रोह** में हिन्दु मुस्लमान की एकता को तोड़ दिया। यहाँ तक भारत के लोगो को रेलगाड़ी में अंगेजों के साथ बैठने की इजाजत नही थी। अंग्रेज अपराध करे तो मामुली दण्ड दिया जाता जबकि भारत के लोगो को कठोर दंड दिया जाता था। अतः अंग्रेजी शासन व्यवस्था और प्रशासनिक व्यवस्था से भारतीय काफी नाराज थे। भारत के लोगो के पास नौकरी के पद में उच्च नींच का भेद-भाव किया जाता था। जिससे भारत में बेरोजगारी की समस्या बहुत ज्यादा बढ़ गया था। साथ से साथ भारत में गरीबी की समस्या बहुत ज्यादा बढ़ते जा रहा था। अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा का खूब प्रचार प्रसार किया।

4. धार्मिक कारण - अंग्रेजों ने हमारे देश में हिंदू-मुस्लिम एकता को भड़काया और हमारी एकता को भंग किया।

★ भारत में रास्ट्रवाद के उदय के कारण –

1. अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध असंतोष
2. आर्थिक कारण
3. अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार
4. मध्यम वर्ग का उदय
5. साहित्य एवं समाचार पत्र का उदय & वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट
6. सामाजिक एवं आर्थिक सुधार आन्दोलन का प्रभाव
7. प्रजातीये विभेद की निति
8. सरकार की प्रतिगामी नीतियाँ

★ प्रथम विश्व युद्ध - First World War

प्रथम विश्व युद्ध यूरोप में होने वाला यह एक वैश्विक युद्ध था जो 28 जुलाई 1914 से 11 नवंबर 1918 तक चला था। इसे महान युद्ध या "सभी युद्धों को समाप्त करने वाला युद्ध" के रूप में जाना जाता था। इस युद्ध में दुनिया भर लगभग 37 देशों ने भाग लिया। इस युद्ध में अनुमानित 9 करोड़ लड़ाकों की मौत और युद्ध के प्रत्यक्ष परिणाम के स्वरूप में 1.3 करोड़ नागरिकों की मृत्यु, जबकि 1918 के स्पैनिश फ्लू महामारी ने दुनिया भर में में 1.7-10 करोड़ की मौत का कारण बना, जिसमें कि यूरोप में अनुमानित 26.4 लाख मौतें और संयुक्त राज्य में 6.75 लाख स्पैनिश फ्लू से हुई।

यह युद्ध दो देशो के बीच लड़ा गया।

मित्र राष्ट्र - अमेरिक, रूस, फ्रांस, जापान, इटली, इग्लैंड

धूरी राष्ट्र - जर्मनी, आस्ट्रीया, हंगरी

★ युद्ध का कारण

28 जून 1914 को गैवरिलो प्रिंसिपल ने साराजेवो में ऑस्ट्रो-हंगेरियन वारिस आर्चड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड को सर्बिया में ही हत्या कर दी जिससे जुलाई संकट पैदा हो गया और इस युद्ध का तात्कालिक कारण बना। इसके उत्तर में, ऑस्ट्रिया-हंगरी ने 23 जुलाई को सर्बिया को एक अंतिम चेतावनी जारी कर दी। सर्बिया का उत्तर ऑस्ट्रियाई लोगों को संतुष्ट करने में विफल रहा और दोनों युद्ध स्तर पर चले गए।

शुरुआत में अमेरिका इस युद्ध में शामिल नही था लेकिन बाद में 1917 मे अमेरिका भी इस युद्ध में शामिल हो गया क्योकिं जर्मनी के द्वारा इंग्लैंड के लुसितानिया नामक जहाज को पानी में डुबो दिया गया था। इस जहाज में लगभग 1153 लोग बैठे हुए थे जिसमें 128 व्यक्ति अमेरिका के थे। इसी के बाद अमेरिका भी एस युद्ध में शामिल हो गया।

* भारत पर प्रभाव

कुल 8 लाख भारतीय सैनिक इस युद्ध में लड़े जिसमें कुल 47746 सैनिक मारे गये और 65000 घायल हुए। इस युद्ध के कारण भारत की अर्थव्यवस्था लगभग दिवालिया हो गयी थी। महात्मा गांधी ने भी इस युद्ध में भारतीय सैनिकों को भेजने के लिए अभियान चलाया। भारतीय राष्ट्रीय

कांग्रेस के बड़े नेताओं द्वारा इस युद्ध में ब्रिटेन को समर्थन ने ब्रिटिश चिन्तकों को भी चौंका दिया था। भारत के नेताओं को आशा थी कि युद्ध में ब्रिटेन के समर्थन से खुश होकर अंग्रेज भारत को इनाम के रूप में स्वतंत्रता दे देंगे या कम से कम स्वशासन का अधिकार देंगे किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। उलटे अंग्रेज़ों ने रौलेट एक्ट और जलियाँवाला बाग नरसंहार जैसे घिनौने कृत्य से भारत के मुँह पर तमाचा मारा।

रॉलेट एक्ट

• 21 मार्च 1919 को भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के उद्देश्य से निर्मित कानून था। रॉलेट एक्ट की घटना मार्च 1919 को घटा था। बढ़ते आंदोलन को रोकने के लिए लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने सर सिडनी रॉलेट की मदद से इस कानून को लाया था। जिसमे शक एवं संदेह के आधार पर किसी भी भारतीय लोगो को पकड़कार जेल में बंद कर दीया जाता था। जिसे रॉलेट एक्ट के नाम से जाना जाता है। इसमे अंगेजो ने भारतीय जनता पर तरह-तरह का अत्याचार किया तथा भोजन में वासी भोजन तथा गंदे नालीयो का पानी पिने को मिलता था। इस एक्ट मे तहत न अपली, न दलील, न वकील किसी भी प्रकार का कोई सुनवाई नही होता था। जिसके कारण इसे काला कानुन भी कहा जाता है। भारत के दो महान क्रांतिकारी नेता डा० सत्यपाल मलिक एवं सैफूदीन किचलु को 9 अप्रैल 1919 ई० को गिरफ्तार कर लिया गया था।

Q. रॉलेट एक्ट से आप क्या समझते है ?

उत्तर - 21 मार्च 1919 को भारत की ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के उद्देश्य से निर्मित कानून था। बढ़ते आंदोलन को रोकने के लिए लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने सर सिडनी रॉलेट की मदद से इस कानून को लाया था। जिसमे शक एवं संदेह के आधार पर किसी भी भारतीय लोगो को पकड़कार जेल में बंद कर दीया जाता था। जिसे रॉलेट एक्ट के नाम से जाना जाता है। इस एक्ट मे तहत न अपली, न दलील, न वकील किसी भी प्रकार का कोई सुनवाई नही होता था। जिसके कारण इसे काला कानुन भी कहा जाता है।

★ जालियावाला बाग हत्याकांड

Q. जालियावाला बाग हत्याकांड से आप क्या समझते है ?

उत्तर - जालियावाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 ई० को पंजाब के अमृतसर शहर में घटा था। रॉलेट एक्ट भारत के दो महान क्रांतिकारी नेता डा० सत्यपाल मलिक एवं सैफूदीन किचलु को 9 अप्रैल 1919 ई० को गिरफ्तार कर लिया गया था।

जिसके कारण पुरे देश में खलबली मच गई। इस बात को लेकर भारतीय जनता ने आपस में मिलकर 13 अप्रैल को बैशाखी के दिन जालियावाला बाग में एक सभा का आयोजन रखा था। जिसमे 20 हजार व्यक्ति शामिल हुए थे। लेकिन अचानक अंगेजो का प्रधान जनरल डायर ने अपने सैनिको को गोली चलाने का आदेश दे दिया। जिसमे सरकारी गवाही के अनुसार 379 व्यक्ति मारे गए। परंतु मरने वालो की संख्या हजारो से अधिक थी। कहा जाता है कि इस बाग मे खुन की नदियाँ बह गई थी। इसके बाद गाँधी जी ने 18 अप्रैल 1919 को सत्याग्रह वापस ले लिया और अंग्रेजो को कैसरे- ए-हिन्द की उपाधि भी वापस कर दी।

★ गाँधी युग // महात्मा गाँधी ★

★ **जन्म** - 2 Oct 1869 (गुजरात के पोरबन्दर में)

★ **पूरा नाम** - मोहन दास करमचन्द गाँधी

★ **पिता का नाम** - करमचन्द गाँधी (राजकोट में दीवान)

★ वकालत की पढाई के लिए इंग्लैंड गये और 1891 में भारत आये और बम्बई में वकालत शुरू कर दिए।

★ 1893 में दक्षिण अफ्रीका गये जहाँ उनके साथ नस्ल के आधार पर भेद-भाव किया गया।

★ अतः दक्षिण अफ्रीका में ही गाँधी जी ने सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया।

Q. सत्याग्रह क्या है ?

उत्तर - सत्याग्रह का मूल अर्थ है सत्य के प्रति आग्रह यानि सत्य को पकड़े रहना और इसके साथ अहिंषा को मानना। अन्याय का सर्वथा विरोध करते हुए अन्यायी के प्रति वैरभाव न रखना, सत्याग्रह का मूल लक्षण है।

★ भारत की राजनीती में गाँधी जी का प्रवेश –

• महात्मा गाँधी 1915 में अफ्रीका से भारत आये।

★ शुरुआत में गाँधी जी अंग्रेजो जो सही मानते थे इसलिए अंग्रेजो ने खुश होकर गाँधी जी को 1915 में ही कैशरे-ए-हिन्द की उपाधि दिया। एवं 1916 ई० में साबरमती आश्रम की स्थापना की।

★ **महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु** - गोपाल कृष्ण गोखले

★ गोपाल कृष्ण गोखले ने ही सर्वप्रथम भारत को अच्छे तरह से जानने के उद्देश्य से गाँ भारत भ्रमण का उपदेश दिया

★ गाँधी जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उदघाटन के अवसर पर पहली बार सार्वजनि लोगों के सामने आये।

खिलाफत आंदोलन - 1919

Q. खिलाफत आंदोलन से क्या समझते है ?

उत्तर - इस आंदोलन की शुरूआत 1919 ई० में ब्रिटेन द्वारा तुर्की के पराजय के बाद शुरू हुआ। तुर्की की बुरी तरह से हार के बाद तुर्की का खलीफा पद और आटोमन सम्राज्य विघटित हो गया। अंग्रेजो ने तुर्की के मुस्लमानों के साथ काफी अत्याचार किया। भारत के मुसलमान को भी यह डर सताने लगा की कहीं मेरे साथ भी ऐसा न हो जाये। इस बात को लेकर तुर्की के मुसलमान और भारतीय मुस्लमान आपस मे मिलकर अंगेजो का विरोध किया। इसमें गाँधी जी के द्वारा हिन्दु और मुस्लमान की एकता को स्थापित करने का कार्य किया।

★ असहयोग आंदोलन - 1920 - 1922

Q. असहयोग आंदोलन एक जन आंदोलन था कैसे ?

उत्तर - हम वास्तविक रूप से कह सकते है कि असहयोग आंदोलन एक जन आदोलन था न कि सामाजिक आदोलन । इस आंदोलन की शुरूआत अगस्त 1920 ई० मे गाँधीजी के द्वारा चलाया गया था। जिसमें बूढ़े, बच्चे, जवान, महिलायें की अहम भागीदारी रही थी। इसमें अंग्रेजी सरकार की ताकत को कमजोर करने का प्रयास किया गया तथा महिलाओं के द्वारा जगह-जगह पर धरना देकर शराब की दुकाने बंद करवा दी। इसमें मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास ने वकालत करना छोड़ दी। इस आंदोलन में कहा गया कि विदेशी वस्तु में आग लगा दी जाए और स्वदेशी वस्तु को अपनाया जाए। भारतीय जनता ने सरकारी कॉलेज और विद्यालयों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर दिया। युवाओं के द्वारा रेल की पटरी उखाड़ दी गई और बैकों में ताला मार दिया गया। इस आंदोलन में छुआ-छुत की भावना का अंत कर दिया। हिन्दु-मुस्लिम की एकता को स्थापित करने का प्रयास किया गया। परंतु चौरी-चौरा हत्याकांड की घटना हो जाने के कारण 22 Feb 1922 गाँधी जी ने इस आंदोलन को वापस ले लिया।

Q. असहयोग आन्दोलन के कारण और इसके प्रभाव को लिखें ?

कारण

→ खिलाफत का मुद्दा

→ पंजाब में सरकार की बर्बरता के विरुद्ध न्याय

→ स्वराज की प्राप्ति करना

प्रभाव

- सरकारी कॉलेज और विद्यालयों का बहिष्कार
- विदेशी वस्तु में आग लगा दी जाए और स्वदेशी वस्तु को अपनाना
- विदेशी न्यायालय के स्थान पर पंचो का फैसला मानना
- सरकारी नौकरी से बहिष्कार
- चरखा और खादी को लोकप्रिय बनाना
- उपाधियों का वहिष्कार

Q. चौरी-चौरा हत्याकांड से क्या समझते है ?

उत्तर - 5 फरवरी 1922 ई० को उत्तरप्रदेश गोरखपुर के देवरिया जिला में चौरी- चौरा नामक स्थान पर हुआ। जिसका मुख्य कारण खाद्यान्न वस्तु के दाम में वृद्धि तथा जगह-जगह पर शराब की दुकान खोलने के खिलाफ हो रहे राजनितिक जुलुस पर पुलिस द्वारा फायरिंग के विरोध में थाना पर हमला करके 22 पुलिस कर्मियों को जिंदा जेल में जला दिया गया था। जिसे चौरी-चौरा हत्याकांड कहते है।

Q. सविनय अवज्ञा आंदोलन से आप क्या समझते है ?

उत्तर - सविनय अवज्ञा आन्दोलन, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस गए जन आन्दोलन में से एक था। 1929 ई० तक भारत को ब्रिटेन के इरादे पर शक होने लगा कि वह औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान करने की अपनी घोषणा पर अमल करेगा या नहीं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन (1929 ई०) में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा कर दी कि उसका लक्ष्य भारत के लिए पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना है। महात्मा गांधी ने अपनी इस माँग पर जोर देने के लिए 6 अप्रैल, 1930 ई० को सविनय अविज्ञा आन्दोलन छेड़ा। जिसका मुख्य उद्देश्य था अंग्रेजो द्वारा बनाये गये कानून को भंग करना।

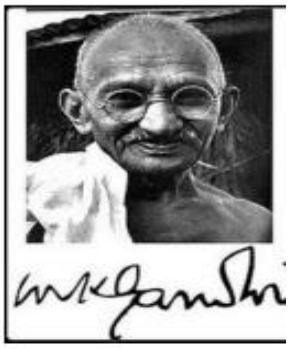

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के मुख्य कारण –

साइमन कमीशन

नेहरु रिपोर्ट

विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का प्रभाव

समाजवाद का बढ़ता प्रभाव

पूर्ण स्वराज्य की मांग

गाँधी का समझौतावादी रुख

क्रांतिकारी आंदोलनों का उभार

Q. साइमन कमीशन से आप क्या समझते है ?

उत्तर - साइमन आयोग सात ब्रिटिश सांसदो का समूह था, जिसका गठन 8 नवम्बर 1927 में भारत में संविधान सुधारों के अध्ययन के लिये किया गया था। इसके अध्यक्ष सर जोन साइमन को रखा गया था। भारत के मुम्बई क्षेत्र में 3 फरवरी 1928 को साइमन कमीशन भारत आया। भारतीय आंदोलनकारियों ने साइमन कमीशन वापस जाओ के नारे लगाए और जमकर विरोध किया। साइमन कमीशन के विरुद्ध होने वाले इस आंदोलन में कांग्रेस के साथ साथ मुस्लिम लीग ने भी भाग लिया। इसमे कुल सदस्य अंग्रेज थे। एक भी भारतीय सदस्य न होने के कारण इसे सफेद कमीशन भी कहा जाता है। इस बात को लेकर भारतीय जनता ने विरोध किया तथा लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन वापस जाओ का नारा लगाया। जिसके विरोध मे लाला लाजपत राय को लाठी से पीट कर हत्या कर दी।

Q. नेहरू रिपोर्ट से आप क्या समझते है ?

उत्तर - नेहरु रिपोर्ट एक प्रकार का संविधान था। जिस समय साईमन कमीशन का विरोध वि रहा था। उस समय भारत के सचिव लॉर्ड बिरकनहैड ने कांग्रेस के नेताओं को यह चुनौती दे कि यदि वे विभिन्न सम्प्रदायों की आपसी सहमति से एक संविधान का प्रारूप तैयार कर सके, त ब्रिटिश सरकार निश्चित ही उस पर सहानुभूति पूर्ण ढंग से विचार कर सकती है। भारतीय नेताओं इस चुनौती

को स्वीकार करते हुए फरवरी 1928 ई० में दिल्ली में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन कि एवं औपनिवेशिक राज्य की माँग की गयी। इस सम्मेलन में मतभेद के कारण कोई भी निर्णय नहीं लिया जा सका। इस प्रारूप को ही 'नेहरू रिपोर्ट' कहकर सम्बोधित किया गया। जिसमे आठ सूत्री मांग को रखा गया।

Q. आर्थिक संकट / महामंदी से आप क्या समझते है ?

उत्तर - अर्थतंत्र से उत्पन्न वह प्रणाली जो कृषि उघोग, व्यापार के विकास को रोक दे उसे आर्थिक संकट कहा जाता है। आर्थिक संकट की शुरूआत 1925 ई० में अमेरिका से हुआ था। जिसमे सबसे बुरा परिणाम अमेरिका को झेलना पड़ा था। क्योंकि इस समय भयंकर बाढ़ के साथ-साथ सुखाड़ भी

आया था। भारत में इस आर्थिक मंदी का असर 1929-30 में पड़ा। जिसका मुख्य कारन था अंग्रेजों ने भारत से धन का निष्कासन बंद नही किया था। जिसमे फसल के पैदावार मे भारी कमी हुई। जिसके कारण वस्तुओ के दाम में बेहतास वृद्धि कारण हो गया। कल-कारखाना बंद हो गए।

Q. ककोरी कांड से आप क्या समझते है ?

उत्तर - 9 अगस्त 1925 ई० को काकोरी स्टेशन पर सरकारी खजाना को लूट लिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रान्तिकारियों द्वारा ब्रिटिश राज के विरुद्ध भयंकर युद्ध छेड़ने की ईच्छा से हथियार खरीदने के लिये ब्रिटिश सरकार का ही खजाना लूट लेने की एक ऐतिहासिक घटना थी। इस ट्रेन डकैती में जर्मनी के बने चार माउज़र पिस्तौल काम में लाये गये थे। इन पिस्तौलों की विशेषता यह थी कि इनमें बट के पीछे लकड़ी का बना एक और कुन्दा लगाकर रायफल की तरह उपयोग किया जा सकता था। इसमे भारत के चार क्रांतिकारियों को फॉसी दे दिया गया था जिनका नाम क्रमशः रामप्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लाहड़ी, रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खा था।

Q. मेरठ षड्यंत्र से आप क्या समझते है ?

उत्तर - मेरठ षड्यंत्र मामला एक विवादास्पद अदालत का मामला था सरकार ने 31 श्रमिक नेताओ को बन्दी बना लिया तथा मेरठ लाकर उ षड्यंत्र केस के विरोध में 21 मार्च 1929 को मोतीलाल नेहरू में केंद्रीय विधानसभा म काम राका प्रस्ताव पेश किया। आइंस्टाइन ने ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड को पत्र लिखकर इस मुकदमे को हटा लेने की मांग की। मेरठ षड्यंत्र केस में फंसे कैदियों को बचाने के लिए जवाहरलाल नेहरू और कुछ बड़े नेताओं ने पैरवी की। मेरठ षड्यंत्र केस का फैसला 16 जनवरी 1933 ईस्वी को सुनाया गया। 27 अभियुक्तों को कड़ी सजा दी गई। मुजफ्फर अहमद को सबसे बड़ी और कड़ी सजा दी गई जिसके तहत उन्हें आजीवन काले पानी की सजा दी गई। इससे श्रमिक आंदोलन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

Q. पूर्ण स्वराज क्या है ?

उत्तर - पूर्ण स्वराज को 1923 ई० में लहौर अधिवेशन में पारित किया गया था। जिसके अध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे। 31 दिसम्बर 1929 की अर्द्धरात्रि को इंकलाब जिंदाबाद के नारों के बीच

रावी नदी के तट पर भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक तिरंगा झंडा फहराया गया। 26 जनवरी 1930 को पूरे राष्ट्र में जगह-जगह सभाओं का आयोजन किया गया, जिनमें सभी लोगों ने सामूहिक रूप से स्वतंत्रता प्राप्त करने की शपथ ली। इस कार्यक्रम को अभूतपूर्व सफलता मिली। गांवों तथा कस्बों में सभायें आयोजित की गयीं, जहां स्वतंत्रता की शपथ को स्थानीय भाषा में पढ़ा गया तथा तिरंगा झंडा फहराया गया।

गाँधी का समझौतावादी रुख

गाँधी और अंग्रेजो के वाइसराय लॉर्ड इरविन के बीच 11 सूत्रीय माँग को लेकर एक समझौता रखा गया था, जिसमें यह कहा गया की सरकार द्वारा इसे पूरा किये जाने की स्थिति में आन्दोलन को रोक दिया जायेगा। परन्तु इरविन ने मांग को मानना तो दूर गाँधी से मिलने से भी इंकार कर दिया। तब महात्मा गाँधी ने एक अलग आन्दोलन दांडी मार्च आरंभ करने का निश्चय लिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन का कार्यक्रम

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अंतर्गत चलाये जाने वाले कार्यक्रम निम्नलिखित थे-

- नमक कानून का उल्लघंन कर खुद के द्वारा नमक बनाया जाए।
- सरकारी सेवाओं, शिक्षा केन्द्रों एवं उपाधियों का बहिष्कार किया जाए।
- महिलाएँ स्वयं शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़े की दुकानों पर जाकर धरना दें।
- समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए उन्हें जला दिया जाए।
- वकीलों द्वारा अदालत का बहिष्कार किया जाय।
- हर घर में चरखा द्वारा सूत काटा जाय।
- कानून तोड़ने की नीति।
- सभी कार्यक्रम में सत्य एवं अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया जाय।

* दांडी यात्रा (12 मार्च से 6 अप्रैल 1930)

महात्मा गांधी ने अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से समुद्र तट पर स्थित दांडी नामक स्थान तक कूच किया। 24 दिनों में 250 कि० मी० की पद यात्रा कर गाँधी जी गुजरात के दांडी नमक समुद्र तट पर 5 अप्रैल को पहुँचे। वहाँ पर लागू नमक कानून को 6 अप्रैल, 1930 ई० को तोड़ा। हजारों नर-नारी और बच्चे बूढ़े कानूनों को तोड़ने के लिए सड़कों पर आ गए। सम्पूर्ण देश गम्भीर रूप से इस आन्दोलन में कूद गया। ब्रिटिश सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिए सख्त कदम उठाये और गांधी जी सहित अनेक कांग्रेसी नेताओं व उनके समर्थकों को जेल में डाल दिया। आन्दोलनकारियों और सरकारी सिपाहियों के बीच जगह-जगह जबर्दस्त संघर्ष हुए। कानपुर जैसे नगरों में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे। हिंसा के इस विस्फोट से गांधी जी चिन्तित हो उठे। वे आन्दोलन को बिल्कुल अहिंसक ढंग से चलाना चाहते थे।

*** गाँधी-इरविन समझौता**

सविनय अवज्ञा आंदोलन की व्यापकता ने अंग्रेजी सरकार को समझौता करने के लिए वाध्य किया जिससे गाँधी और अंग्रेजो के वाइसराय लॉर्ड इरविन के बीच 5 मार्च 1931 ई० को एक समझौता हुआ, जिसे गाँधी इरविन समझौता के नाम है। इसे दिल्ली समझौता भी कहते ते है। जिसके अंतर्गत सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लिया गया। सरकार ने भी गांधी जी व अन्य कांग्रेसी नेताओं को रिहा कर दिया और हिंसा के दोषी लोगों को छोड़कर आन्दोलन में भाग लेने वाले सभी बन्दियों को रिहा कर दिया गया और गाँधी जी **गोलमेज सम्मेलन** के दूसरे अधिवेशन में भाग लेने को सहमत हो गई।

प्रमुख उद्देश्य :

1. नमक बनाने की आजादी

2. भारतीय कैदी को रिहा कर दिया जाए

3. लूट के धन के वापस लिया जाए

4. दमन चक्र की निती बंद कर दी जाए

★ **गोलमेज सम्मेलन:** नमक यात्रा के कारण ही अंग्रेजो यह अहसास हुआ था कि अब उनका राज बहुत दिन नहीं टिक सकेगा और उन्हें भारतीयों को भी सत्ता में हिस्सा देना पड़ेगा। इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोल मेज सम्मेलनों का आयोजन शुरू किया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के परिणाम –

* इस आन्दोलन ने राष्ट्रीय आन्दोलन के सामाजिक विस्तार पर बल दिया।

* इस आन्दोलन ने समाज के सभी वर्गों का राजनीतिकरण किया।

* इस आन्दोलन ने महिलाओं को भी राष्ट्रवादी आन्दोलन से जोड़ा।

* आन्दोलन में आर्थिक बहिष्कार से अंग्रेजों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया।

* इस आन्दोलन के दौरान वानर सेना और मंजरी सेना का गठन कर संगठन के नये तरीके का इस्तेमाल हुआ।

* पहली बार ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस से समानता के आधार पर बातचीत की।

★ चंपारण सत्याग्रह ★

Q. चंपारण सत्याग्रह से आप क्या समझते है ?

उत्तर - अप्रैल 1917 ई० में एक आंदोलन चलाया गया था। जिसे चंपारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। इसमे बिहार और बंगाल के किसान अपने खेतो मे धान, गेहूँ, मक्का की खेती करना चाहते थे। लेकिन गोरे जमीनदारो ने जबदस्ती नील की खेती करने के लिए मजबूर कर दिया। 20 कट्ठा खेत में 3 कठा नील की खेती करना अनिवार्य कर दिया। जिसे 3 कट्ठीया प्रणाली कहा जाता है। नील एक प्रकार का ऐसा फसल था जिस खेत में लगे उस खेत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति को कमजोर कर देता था। किसानो की स्थिती एक दम दैनीय हो गई। बिहार और बंगाल के किसान रोने लगे। जिसे देखकर चंपारण के ही एक किसान राजकुमार शुक्ल को न रहा गया। और उसने जल्दी से गाँधी जी को चंपारण बुलाया और गाँधी जी के कहने पर अवैध वसुली 25 प्रतिशत और 3 कट्ठीया प्रणाली को वापस ले लिया।

खेड़ा आंदोलन

1917 में अधिक वारिश होने से खरीफ की फसल को व्यापक नुकसान हुआ था। गुजर
जिले में किसानों ने कर माफी का आग्रह किया लेकिन सरकार ने माँग को अस्वीकृत क
ही गाँधी जी को सूचना मिली कि खेड़ा के किसान भारी संकट में हैं। फसलें नष्ट हो गइ ह। ।फर

भी उनसे कर वसूली की जा रही है। गांधीजी ने जांच कराई तो पता चला कि किसानों की मांगें सही हैं। नियम के मुताबिक लगान माफी का प्रावधान नही था। गांधीजी ने फौरन खेड़ा पहुंचकर अधिकारियों से बातचीत की लेकिन अधिकारी सुनने तक को तैयार नहीं थे। तब गांधीजी ने 22 जून 1918 को यहाँ सत्याग्रह का आह्वान किया, जो एक महीने तक जारी रहा। इसी बीच रबी की फसल अच्छी होने और सरकार द्वारा दमनकारी उपाय समाप्त करने से गाँधीजी ने सत्याग्रह समाप्त करने की घोषणा कर दी।

मोपला विद्रोह

Q. मोपला विद्रोह से आप क्या समझते है ?

उत्तर - 1921 ई० मे मुसलमानो और हिन्दू जमीनदारो के बीच केरल के मालाबार तट के पास पास एक एक विद्रोह हुआ था। जिसे मोपला विद्रोह के नाम से जाना जाता है। मोपला मुसलमान थे। मुसलमानों पर लगान का बोझ बढ़ा और भूमि संबंधी उनके अधिकार नियंत्रित कर तरह-तरह के अत्याचार किया गया। जिसके विरोध में किसानों ने सरकारी संस्थाओं पर हमले आरम्भ कर दिए। इस परिस्थिति को देखते हुए अक्टूबर 1921 में विद्रोहीयों के खिलाफ सैनिक कारवाई आरम्भ कर दी गयी। जिसमे 10000 लोगो की मौत हो गई तथा 50000 लोग बंदी बनाए गए। इस विद्रोह का सर्मथन गाँधीजी सौकत अली तथा मौलाना अबुल कलाम आजाद ने किया था।

बारदोली सत्याग्रह

फरवरी 1928 में गुजरात के बारदोली में बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में किसानों द्वारा लगान वृद्धि के विरुद्ध में चलाया गया सत्याग्रह बारदोली सत्याग्रह कहलाता है। बारदोली सत्याग्रह के दौरान ही बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि दी गयी। उन्होंने किसानों की समस्या के प्रति बुद्धिजीवियों को भी जागृत किया और महिलाओं को भी इसमें भागीदारी का अवसर प्रदान किया। अगस्त में महात्मा गाँधी ने बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व संभाल लिया। फलस्वरूप सरकार को एक नई जाँच समिति का गठन करना पड़ा और सरकार के द्वारा लगान की दर में कमी किया गया।

Q. AITUC क्या है ?

उत्तर AITUC का पुरा नाम All India Trade Union Congress हैं जिसकी स्थापन 31 अक्टूबर 1920 ई० को मुंबई में किया गया था। जिसमे प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय और सचिव जमना लाल बजाज थे।

उद्देश्य - किसानो एवं मजदूरो की समस्या का समाधान करना।

★ 1922 की गया वार्षिक अधिवेशन

असहयोग आन्दोलन के बाद सन 1922 ई० में गया के वार्षिक अधिवेशन में कांग्रेस दो हिस्सों में बँट गया। एक को परिवर्तन वादी (गरम दल) और दुसरे को अपरिवर्तन वादी (नरम दल) के नाम से जाना गया।

Q. जतरा भगत पर टिप्पणी लिखें।

उत्तर - जतरा भगत उर्फ जतरा उरांव का जन्म सितंबर 1888 में झारखंड के गुमला जिला के चिंगरी नवाटोली गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम कोदल उरांव और माँ का नाम लिबरी था। 1912-14 में उन्होंने ब्रिटिश राज और जमींदारों के खिलाफ अहिंसक असहयोग का आंदोलन छेड़ा और लगान, सरकारी टैक्स आदि भरने तथा

'कुली' के रूप में मजदूरी करने से मना कर दिया। यह 1900 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए 'उलगुलान' से प्रेरित औपनिवेशिक और सामंत विरोधी धार्मिक सुधारवादी आंदोलन था।

Q. भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस की स्थापना कैसे हुई थी इसके उद्देश्य को लिखे।

उत्तर - भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस की स्थापना के पुर्व कोई भी संस्था नही थी फिर भी लोगों का विकास किया जा रहा था तथा इलबर्ट बिल, शस्त्र अधिनियम और भारतीय लोगो की प्रक्रीया को देखते हुए एक राजनीतिक संस्था के गठन को अभाव हुआ और 1884 ई० मे ए० ओ० ह्यूम के द्वारा **भारतीय राष्ट्रीय संघ** का गठन किया गया इस संघ के अधिवेशन की घोषणा पहले पुणा मे किया गया था। प्रंतु अचानक प्लेग रोग फैल जाने के कारण इसकी बैठक गोकुलदास संस्कृत तेजपाल कॉलेज बंबई में किया गया और अन्ततः 28 दिसम्बर 1885 ई० मे इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस कर दिया गया बनर्जी और सचिव ए-ओ-हयूम थे।

उद्देश्य

1. भारत के लोगो को भाईचारा के संबंध में स्थापित करना

2. धर्म, वंश, जाति का भेदभाव मिटाना

3. समाज का कल्याण करना

4. एकता एंव अखण्डता स्थापित करना

5. शिक्षा का प्रसार

★ स्वराज पार्टी की स्थापना

Q. स्वराज पार्टी / दल क्या था ? इसके उद्देश्य को लिखे ।

उत्तर - 1923 ई० में चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू के द्वारा एक पार्टी का गठन किया गया था जिसे स्वराज पार्टी कहा जाता है। इसके प्रथम अध्यक्ष चितरंजन दास और सचिव मोतीलाल नेहरू थे। ठीक इसके पहले असहयोग आदोलन को वापस ले लिया गया था। जिसका प्रमुख कारण चौरी-चौरा कांड था। इसमे 22 पुलिस कर्मियों को जिंदा जेल में जला दिया गया था। इस पार्टी के प्रस्ताव को कॉग्रेस अधिवेशन 1924 ई० में पेश किया गया था। जो असफल साबित हुआ था। इसमे कॉग्रेस नेताओ के दिल पर गहरा चोट पड़ा।

उद्देश्य

1. स्वराज की प्राप्ति ।

2. सरकार पर दबाव डालकर अपने माँगो की पुर्ति करना।

3. 1919 ई० के सुधार अधिनियम को समाप्त किया जाए।

Q. भारत छोड़ो आंदोलन से आप क्या समझते है ?

उत्तर - भारत छोड़ो आदोलन की शुरूआत 9 अगस्त 1942 ई० को गाँधी जी के द्वारा किया गया था। जिसका एक ही लक्ष्य था भारत से बिट्रीश सम्राज्य को मिटाना। इस आंदोलन मे गाँधी जी ने करो या मरो का नारा लगाया था। इसमे 60 हजार लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारो हजार की संख्या मे मौत हो गई थी।

Q. गाँधी जी का राष्ट्रीय आंदोलन मे क्या योगदान रहा ?

उत्तर **1. चंपारण सत्याग्रह:** अप्रैल 1917 ई० में एक आंदोलन चलाया गया था। जिसे चंपारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। इसमे बिहार और बंगाल के किसान अपने खेतो मे धान, गेहूँ, मक्का की खेती करना चाहते थे। लेकिन गोरे जमीनदारो ने जबदस्ती नी की खेती करने के लिए मजबूर कर दिया। 20 कठठा खेत मे 3 कठा नील की खेती करना अनिवार्य कर दिया।

नील एक प्रकार का ऐसा फसल था जिस खेत मे लगे उस खेत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति को कमजोर कर देता था। किसानो की स्थिती एक दम दैनीय हो गई। बिहार और बंगाल के किसान रोने लगे। जिसे देखकर राजकुमार शुक्ला को न रहा गया। और उसने जल्दी से गाँधी जी को बुलाया और गाँधी जी के कहने पर अवैध वसुली 25 प्रतिशत और 3 कट्ठीया प्रणाली को वापस ले लिया।

2. दांडी मार्च:- 12 मार्च 1930 को गाँधी जी के द्वारा साबरमती आश्रम से एक आंदोलन चलाया गया था। जिसे नमक सत्याग्रह / दांडी मार्च कहा जाता है। गाँधी जी दांडी के तट पर पहुंचकर नमक कानुन को भंग किया और अंग्रेजो से कह नमक पर जो टैक्स लगाए हो उसे वापस कर लो नही तो बहुत बड़ा आदालन हो जाएगा।

3. भारत छोड़ो आंदोलन: भारत छोड़ो आदोलन की शुरूआत 9 अगस्त 1942 ई० को गाँधी जी के द्वारा किया गया था। जिसका एक ही लक्ष्य था भारत से बिट्रीश सम्राज्य को मिटाना। इस आंदोलन में गाँधी जी ने करो य मारो का नारा लगाया था। इसमे 60 हजार लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारो हजार की संख्या मे मौत हो गई थी।

Q. गाँधी काल क्या है?

उत्तर - 1919 से लेकर 1947 तक के काल को गाँधी काल के नाम से जाना जाता है।

भारत में राष्ट्रवाद

Short Answer Type Question

1. भारत में राष्ट्रवाद के उदय के सामाजिक कारणों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - अँगरेजों की प्रजातीय विभेद की नीति तथा मध्यम वर्ग का उदय भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख सामाजिक कारण थे। भारतीयों को हेय दृष्टि से देखने, उनपर अनेक प्रतिबंध लगाने तथा

सरकारी सेवाओं से उन्हें अलग रखने की नीति से जनमानस उद्वेलित हो उठा। इसी प्रकार, अँगरेजी शिक्षा प्राप्त मध्यम वर्ग के उदय तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान होने से भारतीयों में भी स्वतंत्रता, समानता और नागरिक अधिकारों की माँग जोर पकड़ने लगी।

2. जालियाँवाला बाग हत्याकांड के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर-स्थित जालियाँवाला बाग में बैशाखी के दिन एकत्रित सभा रॉलेट ऐक्ट एवं पुलिस की दमनकारी नीतियों का विरोध कर रही थी। सभा की कार्रवाई के बीच में ही अमृतसर का सैनिक कमांडर जनरल डायर वहाँ पहुँचा और प्रवेश-द्वार बंद कर निहत्थी भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दीं। इस हत्याकांड में 379 लोग मारे गए तथा करीब 1,200 लोग जख्मी हुए ।

3. असहयोग आंदोलन जनआंदोलन था। कैसे ? व्याख्या करें।

उत्तर - गाँधीजी के नेतृत्व में चलाया जानेवाला यह प्रथम जनआंदोलन था। इसमें असहयोग और बहिष्कार की नीति प्रमुखता से अपनाई गई। इस आंदोलन का व्यापक जनाधार था। शहरी क्षेत्र में मध्यम वर्ग तथा ग्रामीण क्षेत्र में किसानों और आदिवासियों का इसे व्यापक समर्थन मिला। श्रमिक वर्ग की भी इसमें भागीदारी रही। इस प्रकार, यह पहला जनआंदोलन बन गया।

4. चौरीचौरा की घटना के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - यह स्थान उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में स्थित है। असहयोग आंदोलन के दौरान 5 फरवरी 1922 को पुलिस ने निःशस्त्र प्रदर्शनकारियों पर गोली चला दी। इससे प्रदर्शनकारी उग्र हो उठे। पुलिस ने भागकर थाना में शरण ली। भीड़ ने थाना में आग लगा दी। इस घटना में 22 पुलिसकर्मी जिंदा जल मरे । गाँधीजी इस घटना से दुःखी हो गए। अतः, 11 फरवरी को उन्होंने आंदोलन बंद करने की घोषणा की। इससे काँग्रेस का युवा वर्ग क्षुब्ध हो गया।

5. गाँधीजी ने नमक कानून क्यों भंग किया? इसका क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर - सरकार ने नमक के व्यवहार पर कर लगा रखा था। साथ ही, इसके व्यक्तिगत ढंग से उत्पादन करने पर भी प्रतिबंध लगा हुआ था। इससे लोगों में व्यापक असंतोष था। गाँधीजी नमक कानून को ब्रिटिश शासन का सबसे दमनकारी पहलू मानते थे। इसलिए, इस कानून को भंगकर वे

समाज के सभी वर्गों को एकजुट करना चाहते थे। अतः, नमक कानून भंगकर उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दिया (1930)।

6. गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली पैक्ट) के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान वायसराय इरविन ने गाँधीजी से समझौता वार्ता आरंभ की। फलतः, 5 मार्च 1931 को गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली पैक्ट) हुआ। सरकार ने दमनचक्र बंद करने तथा राजनीतिक बंदियों को छोड़ने का आश्वासन दिया। बदले में गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस ले लिया। वे द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पर भी तैयार हो गए।

7. साइमन कमीशन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - साइमन कमीशन (आयोग) फरवरी 1928 में भारत आया। इसका उद्देश्य 1919 के अधिनियम द्वारा स्थापित उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों की समीक्षा करना एवं आवश्यक सुझाव देना था।

आयोग के बंबई (मुंबई) पहुँचने पर इसका स्वागत काले झंडों एवं प्रदर्शनों से किया गया एवं 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगाए गए। देशभर में विरोध प्रदर्शन हुए जिसका जवाब अँगरेज पुलिस ने लाठी-डंडों से दिया ।

8. एका आंदोलन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - यह आंदोलन उत्तर प्रदेश के हरदोई, बहराइच और सीतापुर जिलों में किसानों द्वारा चलाया गया । लगान की ऊँची दर तथा जमींदारी शोषण के विरुद्ध संगठित होकर किसानों ने यह आंदोलन (एकता आंदोलन) चलाया। किसानों को संगठित करने के लिए धार्मिक रीति-रिवाजों का सहारा लिया गया। उन्हें शपथ दिलाई गई कि वे संगठित होकर सरकारी और जमींदारी शोषण का विरोध करेंगे। आंदोलन में छोटे किसानों और स्थानीय जमींदारों ने प्रमुखता से भाग लिया। 1922 तक सरकार ने इस आंदोलन को दबा दिया।

9. खेड़ा आंदोलन का परिचय दें।

उत्तर - 1917 में गुजरात के खेड़ा जिला में खरीफ की फसल को क्षति पहुँचने से किसानों की स्थिति दयनीय हो गई थी। वे सरकार से लगान माफी की माँग कर रहे थे। गाँधीजी ने उनकी माँगों का

समर्थन किया, परंतु सरकार ने माँग नहीं मानी। अतः, जून 1918 में गाँधीजी ने सत्याग्रह आरंभ कर दिया। बाध्य होकर सरकार को किसानों को राहत देनी पड़ी। किसानों की स्थिति में सुधार आने के बाद गाँधीजी ने सत्याग्रह वापस ले लिया। इस सत्याग्रह द्वारा किसानों में अँगरेजी शोषण का विरोध करने का साहस जगा ।

10. बारदोली सत्याग्रह के विषय में आप क्या जानते हैं?

उत्तर - गुजरात के सूरत जिला में स्थित बारदोली में 1926-28 में व्यापक किसान आंदोलन हुआ। यह आंदोलन बढ़े हुए लगान के विरुद्ध हुआ। किसानों ने बढ़ी हुई दर पर लगान देने से इनकार कर दिया। आंदोलन को वल्लभभाई पटेल ने नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने 'बारदोली' पत्रिका प्रकाशित कर आंदोलन का प्रचार किया। आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। गाँधीजी भी इसमें शरीक हुए। सरकार ने ब्रूमफील्ड और मैक्सवेल जाँच समिति की अनुशंसा पर बढ़ी हुई लगान की राशि 30 प्रतिशत से घटाकर 6.3 प्रतिशत कर दी। यह किसानों की बड़ी विजय थी।

11. मोपला विद्रोह पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - केरल के मालाबार में 19वीं 20वीं शताब्दियों में मोपलाओं के अनेक विद्रोह हुए। मोपला एक वर्ग समूह था जिसमें किसान-मजदूर और अन्य लोग सम्मिलित थे। विद्रोह भू-स्वामियों के अत्याचारों के विरुद्ध हुआ। इसमें धर्म की भी प्रमुख भूमिका थी। मोपला मुसलमान थे और भू-स्वामी नायर और नम्बूदरी हिंदू । मोपला खलीफा के साथ किए गए अन्याय से भी क्रुद्ध थे, अतः उनलोगों ने विद्रोह कर दिया। 1921 में सबसे बड़ा मोपला विद्रोह हुआ। मोपलाओं ने अली मुसालियार को अपना राजा घोषित कर धार्मिक उन्माद एवं हिंसा भड़काई । सरकार ने अली मुसालियार को गिरफ्तार कर सेना की सहायता से विद्रोह को कुचल दिया।

12. 'मेरठ षड्यंत्र' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभ में भारत में साम्यवादी विचारधारा का प्रसार हुआ। साम्यवादियों ने किसानों मजदूरों की स्थिति में सुधार लाने की माँग रखी। साथ ही, इनलोगों ने क्रांतिकारी आंदोलन को समर्थन दिया तथा साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद का विरोध किया। इसलिए, असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद सरकार ने साम्यवादियों के विरुद्ध दमनात्मक कार्रवाई की। साम्यवादियों पर

अनेक मुकदमे चलाए गए। इसी में मेरठ षड्यंत्र केस (1929-33) भी था । इसमें 8 साम्यवादियों पर मुकदमा चलाकर उन्हें दंडित किया गया।.

13. अल्लूरी सीताराम राजू के विद्रोह का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर - 1920 के दशक में आंध्रप्रदेश की पहाड़ियों में एक विद्रोह हुआ। इसका मुख्य कारण नए वन कानून थे। इन कानूनों द्वारा आदिवासियो के परंपरागत वन-संबंधी अधिकारों पर रोक लगा दी गई। इससे आदिवासी विद्रोह पर उतारू हो गए। उस विद्रोह का नेतृत्व अल्लूरी सीताराम राजू नामक एक चमत्कारिक व्यक्ति ने किया। आदिवासियों पर उनका व्यापक प्रभाव था। आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने सरकार और पुलिस से गुरिल्ला युद्ध किया। 1924 में सरकार ने उन्हें पकड़ कर मौत की सजा दे दी।

14. जतरा भगत के विषय में आप क्या जानते हैं? अथवा, टाना भगत आंदोलन पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर - छोटानागपुर (झारखंड) के ओराँव जनजातियों ने जतरा भगत के नेतृत्व में 20वीं शताब्दी के आरंभिक चरण में टाना भगत आंदोलन चलाया था। जतरा भगत गाँधीजी के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने अहिंसक आंदोलन चलाया। इसमें सामाजिक और शैक्षणिक सुधारों पर विशेष बल दिया गया। साथ ही, एकेश्वरवाद पर भी बल दिया गया। जमींदारों और साहूकारों के अत्याचारों का भी शांतिपूर्ण विरोध करने को कहा गया। आंदोलन का व्यापक प्रभाव पड़ा। बिहार (झारखंड) में गाँधीजी के असहयोग आंदोलन को इसने व्यापक आधार प्रदान किया।

15. ऑल इंडिया मुसलिम लीग की स्थापना कैसे हुई? इसकी आरंभिक नीति क्या थी? अथवा, मुसलिम लीग के क्या उद्देश्य थे ?

उत्तर - 1906 में मुसलमानों का एक शिष्टमंडल अपनी माँगों के साथ आगा खाँ के नेतृत्व में वायसराय मिंटो से शिमला में मिला। मिंटो ने उनकी माँगों को पूरा करने का आश्वासन दिया। ढाका में एकत्रित प्रमुख मुसलमानों ने 30 दिसंबर 1906 को मुसलिम लीग की स्थापना की। लीग ने सरकार के साथ सहयोग का रास्ता अपनाया तथा सरकारी नौकरियों एवं व्यवस्थापिका सभाओं में प्रतिनिधित्व एवं पृथक निर्वाचन मंडलों की माँग की।

16. स्वराज दल का गठन क्यों हुआ ? इसकी क्या उपलब्धियाँ थीं ?

अथवा, स्वराज पार्टी की स्थापना एवं इसके उद्देश्य की विवेचना करें।

उत्तर - गाँधीजी द्वारा अचानक असहयोग आंदोलन वापस लेने से क्षुब्ध होकर काँग्रेस के अंदर दो गुट बन गए। (i) परिवर्तनवादी गुट, जिसमें प्रमुख चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू थे। ये काँग्रेस द्वारा अधिक सशक्त नीति अपनाए जाने की माँग कर रहे थे। ये कौंसिलों में प्रवेश कर प्रभावशाली ढंग से सरकार का विरोध करना चाहते थे। (ii) अपरिवर्तनवादी गुट, गाँधीजी के मार्ग पर ही चलना चाहते थे। गया काँग्रेस अधिवेशन में दोनों गुटों में विभाजन हो गया। 1923 में चित्तरंजन दास और मोतीलाल नेहरू ने स्वराज पार्टी की स्थापना की। चित्तरंजन दास इसके अध्यक्ष बने। 1923 के चुनावों में इस दल को बड़ी सफलता मिली। अपनी अड़ंगावादी नीति से इसने कौंसिलों में सरकार का काम करना कठिन कर दिया।

17. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस की स्थापना क्यों हुई ?

उत्तर - 1917 की रूसी क्रांति के पश्चात भारत में भी साम्यवादी विचारधारा का प्रसार होने लगा। साम्यवादियों ने किसानों और श्रमिकों की ओर ध्यान दिया एवं उन्हें संगठित करने का प्रयास किया। इसके लिए श्रमिक संगठन बनाए जाने लगे। इनमें प्रमुख था अक्टूबर 1920 में बंबई में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में गठित ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस। इसके बैनर के अंतर्गत श्रमिकों को संगठित करने का प्रयास किया गया।

18. भारत में समाजवादी दल का गठन कैसे हुआ?

उत्तर - 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में समाजवादी विचारधारा का उदय और विकास हुआ। समाजवादी किसानों और मजदूरों की स्थिति में सुधार लाना चाहते थे। काँग्रेस के अंदर वामपंथी के अतिरिक्त समाजवादी धारा उभरने लगी। नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया जैसे नेता समाजवादी कार्यक्रम अपनाने की माँग करने लगे। जयप्रकाश नारायण ने 1931 में बिहार समाजवादी दल की स्थापना की। 1934 में बंबई में काँग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की गई। स्वतंत्रता आंदोलन में समाजवादियों का महत्त्वपूर्ण योगदान था ।

19. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर०एस०एस०) पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर - आर. एस. एस. की स्थापना 1925 में के. बी. हेडगेवार ने नागपुर में की थी। इसका मुख्य उद्देश्य युवकों को चारित्रिक एवं शारीरिक रूप से मजबूत बनाकर सशक्त राष्ट्र का निर्माण करना था।

इसने हिंदू राष्ट्रवाद का नारा दिया तथा हिंदू धर्म एवं समाज के पुनरुत्थान की नीति अपनाई। सामाजिक संगठन के रूप में यह संस्था आज भी कार्यरत है।

भारत में राष्ट्रवाद

Long Answer Type Question

1. राष्ट्रवाद से आप क्या समझते हैं ? भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख कारणों की व्याख्या करें।

उत्तर - राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ है- 'राष्ट्रीय चेतना का उदय ।' यह ऐसी चेतना है जिसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक एकता की अनुभूति होती है। इसमें राष्ट्रीय तत्त्वों को महत्त्व प्रदान किया जाता है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारतीय राष्ट्रवाद का तेजी से विकास हुआ। इसके उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

(i) **भारत का राजनीतिक एकीकरण** - 1857 के बाद अँगरेजी अधिसत्ता की स्थापना से भारत का एकीकरण हुआ । इस प्रक्रिया में राष्ट्रीय तत्त्व प्रमुख बन गए।

(ii) **सरकार की प्रतिगामी नीतियाँ** - अँगरेजी सरकार की प्रतिगामी नीतियों से भारतीयों का आक्रोश बढ़ा।

(iii) **प्रजातीय विभेद की नीति** - अँगरेजों की प्रजातीय विभेद की नीति से भारतीय आहत हो उठे। यह राष्ट्रवाद के विकास का महत्त्वपूर्ण कारण बन गया।

(iv) **अँगरेजी सरकार के विरुद्ध असंतोष की भावना** - अँगरेजी नीतियों के कारण समाज का प्रत्येक वर्ग असंतुष्ट था।

(v) **सरकार की आर्थिक नीतियाँ** - सरकारी आर्थिक नीतियों के कारण गरीबी, बेरोजगारी बढ़ी। भारत से धन का निष्कासन बढ़ा। इसकी प्रतिक्रिया हुई ।

(vi) **मध्यम वर्ग का उदय** - मध्यम वर्ग ने सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जगाने - का काम किया।

(vii) **पश्चिमी जगत से संपर्क** - आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने से भारतीयों की मानसिक जड़ता समाप्त हो गई। वे भी समानता, स्वतंत्रता एवं नागरिक अधिकारों की माँग करने लगे।

(viii) सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव - 19वीं शताब्दी के सामाजिक- धार्मिक सुधार आंदोलनों एवं इनके नेताओं तथा संगठनों ने भारतीयों में आत्मसम्मान, गौरव की भावना जागृत कर राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

(ix) साहित्य एवं समाचारपत्रों का योगदान - समाचारपत्रों एवं साहित्यकारों ने अपने लेखों और रचनाओं से राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना जागृत की।

(x) प्राचीन संस्कृति का ज्ञान - अपनी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने से भी भारतीयों में देशभक्ति की भावना जगी ।

(xi) राजनीतिक संस्थाओं का योगदान - 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने राष्ट्रवादी गतिविधियों को संगठित करने एवं उन्हें एक नई दिशा देने का प्रयास किया।

2. अखिल भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना कैसे हुई? इसके प्रारंभिक उद्देश्य क्या थे?

उत्तर - 1885 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के पूर्व देश में कोई अखिल भारतीय राजनीतिक संस्था नहीं थी। आर्म्स एक्ट और इलबर्ट बिल पर हुए विवाद एवं भारतीय प्रतिक्रिया को देखते हुए एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन की आवश्यकता महसूस की गई। अतः, इंडियन एसोसिएशन के सचिव आनंद मोहन बसु ने दिसंबर 1883 में सभी राजनीतिक प्रतिनिधियों की सभा - इंडियन नेशनल काँफ्रेंस - का आयोजन कलकत्ता में किया। इसी समय एक उदारवादी सेवानिवृत्त अँगरेज पदाधिकारी ए० ओ० ह्यूम भी इस दिशा में प्रयासरत थे। ह्यूम का उद्देश्य भारत को क्रांतिकारी मार्ग पर जाने से रोकना था। वह ऐसी संस्था बनाना चाहते थे जो अपनी माँगों के लिए शांतिपूर्ण संवैधानिक मार्ग अपना सके। अपनी संस्था को वह 'सुरक्षा कवच' बनाना चाहते थे। भारतीय नेता स्वयं कोई राजनीतिक संगठन बनाकर आरंभ से ही सरकार का कोपभाजन बनना नहीं चाहते थे। इसलिए, भारतीयों ने ह्यूम की संस्था का उपयोग 'विद्युत-प्रतिरोधक' के रूप में किया। ह्यूम के प्रयास का समर्थन प्रमुख भारतीय नेताओं ने भी किया। ह्यूम ने लॉर्ड डफरिन एवं ब्रिटिश पार्लियामेंटरी कमेटी की सहमति प्राप्तकर इंडियन नेशनल यूनियन स्थापित करने की योजना बनाई। 5 दिसंबर 1885 को इंडियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना की घोषणा की गई। पहले इसका अधिवेशन पूना में होना था, परंतु वहाँ प्लेग फैलने के कारण इसका अधिवेशन 28 दिसंबर 1885 को बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में हुआ। इसकी अध्यक्षता व्योमेशचंद्र बनर्जी ने की। काँग्रेस का आरंभिक उद्देश्य राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास करना, राजनीतिक और सामाजिक

प्रश्नों पर प्रमुख नागरिकों एवं शिक्षित वर्गों के मतों की अभिव्यक्ति करना तथा सुधारों के लिए वायसराय और उनकी कौंसिल को स्मारपत्र देना था।

3. सुसलिम लीग की स्थापना की परिस्थितियों की विवेचना करें।

उत्तर - 1857 के विद्रोह के पश्चात अँगरेजी सरकार ने हिंदू-मुसलिम एकता को तोड़ने की नीति अपनाई। वे दोनों समुदायों में फूट डालकर (फूट डालो और राज करो) उन्हें अलग करना चाहते थे। अतः, मुसलमानों को अपनी ओर मिलाने का प्रयास आरंभ कर दिया। 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को हिंदुओं की संस्था बताकर मुसलमानों को इससे अलग रखने का प्रयास किया गया। साथ ही, अँगरेज-मुसलिम मैत्री बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। इससे मुसलमानों में पृथकतावादी भावना का उदय हुआ। इसी समय हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और उन्हें संगठित करने के प्रयासों से मुसलमान आशंकित हो गए। वे अँगरेजों को अपना संरक्षक मानने लगे। उनकी सहायता से वे अपना आर्थिक पिछड़ापन दूर करना चाहते थे। मुसलमानों में हुए सुधार आंदोलनों, वहाबी आंदोलन, अहमदिया आंदोलन इत्यादि ने इसलाम का प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। सैयद अहमद खाँ के नेतृत्व में अलीगढ़ आंदोलन चलाया गया। उनका मानना था कि पश्चिमी शिक्षा प्राप्त कर मुसलमान भी सरकारी नौकरियों से अपना पिछड़ापन दूर करें । काँग्रेस के 'गरमपंथियों' की नीति से भी मुसलमान काँग्रेस से विमुख होकर अँगरेजों की ओर मुड़े। अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए वे अपना संगठन बनाने की सोचने लगे। 1905 के बंगाल विभाजन ने इसे और अधिक बढ़ावा दिया।

फलतः, 1906 में मुसलमानों का एक प्रतिनिधिमंडल आगा खाँ के नेतृत्व में शिमला में लॉर्ड मिंटो से मिला। इसने अँगरेजी राज में अपनी भक्ति प्रकट की तथा अपने लिए राजनीतिक और अन्य सुविधाओं की माँग रखी। लॉर्ड मिंटो का आश्वासन प्राप्त कर ढाका के नवाब सलीम्मुलाह, मोहसिन मुल्क, आगा खाँ और नवाब बकर- उल-मुल्क के प्रयासों से ढाका में 30 दिसम्बर 1906 को ऑल इंडिया मुसलिम लीग की स्थापना की गई।

4. प्रथम विश्वयुद्ध का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध का भारत पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ा।

(i) आर्थिक परिणाम - प्रथम विश्वयुद्ध ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अव्यवस्थित कर दिया। युद्ध के नाम पर सरकार ने भारी कर्ज लिया। इसकी भरपाई के लिए सीमा शुल्क और अन्य करों में वृद्धि की गई। आयात शुल्क और आयकर लगाया गया। अनाज का मूल्य बढ़ गया। कृषि की अवनति हुई। गरीबी और महँगाई बढ़ गई। पूँजीपति और साहूकार मालामाल हो गए।

(ii) क्रांतिकारी गतिविधियों में वृद्धि - सरकार को युद्ध में व्यस्त पाकर क्रांतिकारियों ने अपनी गतिविधियाँ बढ़ा दी। बंगाल, उत्तर प्रदेश और सरहदी इलाकों में तथा विदेशों में भी क्रांतिकारी घटनाओं में तेजी आई। इनका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति द्वारा सरकार का तख्तापलट करना था। गदर पार्टी (1913) और भारतीय स्वाधीनता समिति (1914) की स्थापना की गई। 1915 में काबुल में महेंद्र प्रताप की अध्यक्षता में भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।

(iii) राष्ट्रवादी गतिविधियों में वृद्धि - युद्ध के दौरान राष्ट्रवादियों ने स्वराज प्राप्ति और हिंदू-मुसलिम एकता के लिए प्रयास तेज कर दिए। 1916 में काँग्रेस और मुसलिम लीग के बीच लखनऊ समझौता हुआ। इससे हिंदू-मुसलिम सौहार्द की भावना बढ़ी। श्रीमती एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक ने होमरूल आंदोलन का प्रचार कर गृह शासन की माँग के लिए पूरे देश में वातावरण तैयार किया।

(iv) खिलाफत आंदोलन आरंभ हुआ - तुर्की के सुलतान (खलीफा) के साथ किए गए अन्याय के विरुद्ध भारत में खिलाफत आंदोलन आरंभ हुआ।

(v) संवैधानिक सुधारों की घोषणा - 1917 में भारत सचिव एडविन मांटेग्यू ने भारत में क्रमिक रूप से उत्तरदायी शासन की स्थापना की घोषणा की। इसी के आधार पर 1919 में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड योजना (भारत सरकार अधिनियम, 1919) पारित किया गया।

5. प्रथम विश्वयुद्ध के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के साथ अंतरसंबंधों की व्याख्या करें।

उत्तर - प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं जिनका भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

(i) भारतीय नेताओं ने सरकार को युद्ध में स्वराज - प्राप्ति की आशा में सहयोग दिया, परंतु ऐसा हुआ नहीं। इससे राष्ट्रवादी गतिविधियाँ बढ़ीं।

(ii) सरकार की आर्थिक नीतियों के विरुद्ध व्यापक प्रतिक्रिया हुई।

(iii) सरकार को युद्ध में व्यस्त पाकर क्रांतिकारियों ने अपनी गतिविधियाँ बढ़ा

दीं।

(iv) भारतीयों में बढ़ते असंतोष को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने संवैधानिक सुधारों की घोषणा की।

(v) विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय राष्ट्रवादी स्वराज -प्राप्ति और हिंदू-मुसलिम एकता बनाए रखने हेतु प्रयासशील थे। एनी बेसेंट और तिलक ने गृह शासन की माँग के लिए वातावरण तैयार किया।

6. गुजरात के किसान आंदोलन में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका पर प्रकाश डालें।

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभ में गुजरात में भी किसान आंदोलन हुए। पहला किसान आंदोलन खेड़ा में हुआ। 1918 में समय पर वर्षा नहीं होने से तंबाकू और कपास की फसल नष्ट हो गई। इसका किसानों पर बुरा प्रभाव पड़ा। वे लगान चुकाने में असमर्थ हो गए। गाँधीजी के प्रयासों से किसानों को कुछ राहत मिली। इसी आंदोलन के दौरान वल्लभभाई पटेल गाँधीजी के संपर्क में आए और जीवनपर्यंत उनके साथ बने रहे।

1926 में सूरत जिला के बारदोली में व्यापक किसान आंदोलन हुआ। इसका मुख्य कारण लगान में तीस प्रतिशत की वृद्धि थी। किसान इसे चुकाने में असमर्थ थे। अतः उनलोगों ने लगान देने से इनकार कर दिया। लगान में वृद्धि के विरुद्ध किसानों ने आंदोलन आरंभ कर दिया। इस आंदोलन को नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने प्रदान किया। उनके नेतृत्व में व्यापक आंदोलन चला। इसी आंदोलन के दौरान वल्लभभाई को 'सरदार' की उपाधि प्रदान की गई। किसानों के व्यापक आंदोलन को देखते हुए सरकार ने 'बारदोली जाँच आयोग का गठन किया। आयोग ने लगान वृद्धि को अनुचित बताकर उसे वापस लेने की अनुशंसा की । सरदार ने किसानों को संगठित कर अपनी माँगें पूरी होने तक आंदोलन चलाने को उत्प्रेरित किया। उन्होंने 'बारदोली' पत्रिका का प्रकाशन कर आंदोलन का प्रचार-प्रसार किया। आंदोलन में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। सरकार ने आंदोलनकारियों में फूट डालने का प्रयास किया परंतु वह सफल नहीं हो सकी। आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। 1928 तक आंदोलन व्यापक हो गया। बंबई के रेलकर्मियों ने हड़ताल का आयोजन किया। स्वयं महात्मा गाँधी बारदोली गए। सरकार आंदोलनकारियों के सामने झुक गई। उसने ब्रुमफील्ड और मैक्सवेल जाँच समिति का गठन किया। इसकी अनुशंसा पर बढ़ी हुई लगान

की दर घटाकर 6.3 प्रतिशत कर दी गई। यह किसानों और सरदार पटेल के नेतृत्व की बड़ी उपलब्धि थी।

7. सुभाषचंद्र बोस की जीवनी एवं कार्यों पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर - सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक में हुआ था। 1920 में वह आई० सी० एस० की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सरकारी नौकरी में आए, परंतु शीघ्र ही उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। देशबंधु चित्तरंजन दास से प्रभावित होकर उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। 1924 में वे कलकत्ता कॉरपोरेशन के मेयर बने। उनके क्रांतिकारी विचारों के कारण उन्हें गिरफ्तार करके तीन वर्षों के लिए निष्कासित कर मांडले (बर्मा) भेज दिया गया। वापस लौटकर वे काँग्रेस की राजनीति में सक्रिय हो गए। जवाहरलाल नेहरू के साथ उन्होंने काँग्रेस के अंदर वाम मोर्चा बनाया और इंडिपेंडेंस लीग बनाई। वे काँग्रेस की दक्षिणपंथी नीति और गाँधीजी की नीतियों के विरोधी थे। 1939 में पट्टाभि सीतारमैया को पराजित कर वह कॉग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुए। काँग्रेस में अपने प्रति बढ़ते विरोध को देखकर उन्होंने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया एवं फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की। उनकी गतिविधियों से आशंकित होकर अँगरेजी सरकार ने उन्हें कलकत्ता में नजरबंद कर लिया। 1941 में छद्म वेश में वे भारत से निकल गए तथा काबुल, मास्को के रास्ते बर्लिन पहुँच गए। बर्लिन से वे जापान गए तथा आजाद हिंद फौज की कमान सँभाली। सिंगापुर में उन्होंने 1943 में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार बनाई। उन्होंने नारा दिया, "तुम मुझे खून दो, मैं तुझे आजादी दूँगा" तथा "दिल्ली चलो"। जापानी सहयोग से उन्होंने सशस्त्र युद्ध छेड़ दिया और कोहिमा तक पहुँच गए। इसी बीच द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान की लगातार होती हार से बाध्य होकर वे टोकियो जाने के लिए तैयार हुए। मार्ग में ही 18 अगस्त 1945 को विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।

8. भारत में मजदूर आंदोलन के विकास का वर्णन करें।

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभिक चरण में भारत में मजदूरों का आंदोलन हुआ। उद्योगों और कारखानों की स्थापना ने श्रमिक एवं पूँजीपति वर्ग को जन्म दिया। पूँजीपतियों ने श्रमिकों का शोषण किया। धीरे-धीरे वामपंथियों के प्रभाव में श्रमिकों में अपने अधिकारों के प्रति चेतना जगी । वामपंथियों ने श्रमिकों को संगठित करने का प्रयास किया । सुब्रह्मण्यम अय्यर ने 1903 में मजदूर यूनियन की स्थापना की। प्रथम विश्वयुद्ध तक मजदूरों के अनेक संगठन स्थापित हो चुके थे; जैसे -

चटकल यूनियन, ईस्ट इंडिया रेलवे इंप्लाइज एसोसिएशन इत्यादि । 1917 में रूस में साम्यवादी सरकार के गठन, 1919 में कौमिंटर्न तथा अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना का प्रभाव भारतीय श्रमिकों पर भी पड़ा। आगे चलकर, 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस, ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन, हिंद मजदूर संघ जैसे संगठन स्थापित कर श्रमिकों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया गया । श्रमिकों ने हड़ताल को अपना अस्त्र बनाया। 1907 में रेलकर्मियों एवं 1908 में बंबई में मजदूरों ने बड़ी हड़ताल की। 1918 में अहमदाबाद में मिल मजदूरों ने हड़ताल की। गाँधीजी के प्रयासों से हड़ताल समाप्त हुआ तथा श्रमिकों की मजदूरी बढ़ी। इस आंदोलन ने 1920 में कपड़ा मजदूर सभा के गठन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद मजदूर आंदोलन अधिक व्यापक हो गए। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर श्रमिकों ने स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

9. भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में वामपंथियों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - 20वीं शताब्दी के आरंभ में भारत में साम्यवादी अथवा वामपंथी विचारधारा का प्रचार हुआ। बंबई और अन्य स्थानों में साम्यवादी दर्शन से प्रभावित बुद्धिजीवी समूहों का गठन कर साम्यवाद का प्रचार कर रहे थे। इसके लिए इनलोगों ने पत्र-पत्रिकाओं का भी सहारा लिया। 1917 की रूसी क्रांति के बाद भारत में साम्यवादी विचारधारा का तेजी से प्रसार हुआ। साम्यवादियों ने श्रमिकों और किसानों की ओर अपना ध्यान दिया। उन्हें संगठित करने का प्रयास किया गया। श्रमिक संघ स्थापित किए गए। 1920 में बंबई में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस बनी। बाद में एन० एम० जोशी ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन का गठन किया। श्रमिकों के साथ किसानों को भी सम्मिलित कर प्रजा पार्टी, अखिल भारतीय किसान- मजदूर पार्टी जैसे संगठन बनाए गए। इनके प्रभाव से श्रमिकों और किसानों को शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। वामपंथियों ने साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का भी विरोध किया। क्रांतिकारी आंदोलनों को भी इनलोगों ने समर्थन एवं संरक्षण दिया। इसलिए, असहयोग आंदोलन के बाद पेशावर षड्यंत्र, कानपुर षड्यंत्र एवं मेरठ षड्यंत्र केस में मुकदमा चलाकर इन्हें दंडित किया गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान साम्यवादियों ने काँग्रेस का विरोध किया। इसी प्रकार, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भी वामपंथी इससे अलग रहे। वामपंथी विचारधारा से काँग्रेस का युवा वर्ग भी प्रभावित हुआ। जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस भी वामपंथी विचारधारा से प्रभावित थे। 1939 में सुभाषचंद्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना की।

4. भारत में राष्ट्रवाद

1. भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का सबसे प्रमुख कारण क्या था।

(A) अंगरजी शासन के विरुद्ध असंतोष

(B) साहित्य एवं समाचारपत्रों का प्रकाशन

(C) भारत का राजनीतिक एककिकरण

(D) भारत का प्रकाशनिक एककीकरण

[*Ans* – (A)]

2. ब्राह्मण समाज की स्थापना किसने की ?

(A) राजा राममोहन राय

(B) दयानन्द सरस्वती

(C) विवेकानंद

(D) रामकृष्ण परमहंस

[*Ans* – (A)]

3. आर्म्स एक्ट किसने लागू किसने किया था ?

(A) डलहौजी ने

(B) कैनिंग ने

(C) लिटन ने

(D) रिपन ने

[Ans – (C)]

4. बंगाल विभाजन के परिणामस्वरूप किस आंदोलन की शुरुआत हुई ?

(A) असहयोग आंदोलन

(B) स्वदेशी आंदोलन

(C) खिलापत आंदोलन

(D) भारत छोड़ो आंदोलन

[Ans – (B)]

5. बंगाल विभाजन 1911 ई॰ में किसने रद्द किया ?

(A) लॉर्ड लिटन

(B) लॉर्ड कर्जन

(C) लॉर्ड रिपन

(D) लॉर्ड हार्डिंग्र

[*Ans* – (D)]

6. फुट डालो और राज करो की नीति की नीति किसने अपनायी ?

(A) आंग्रेजों ने

(B) पारसियों ने

(C) मुसलमानों

(D) पंजाबियों ने

[*Ans* – (A)]

7. सिपाही विद्रोह कब हुआ था ?

(A) 1855 ई०

(B) 1857 ई०

(C) 1885 ई०

(D) 1887 ई०

[*Ans* – (B)]

8. बंगाल का विभाजन कब कब हुआ था ?

(A) 1855 ई०

(B) 1857 ई०

(C) 1905 ई०

(D) 1911 ई०

[*Ans* – (C)]

9. गांधीजी साबरमती आश्रम की स्थापना किस वार्स की ?

(A) 1895

(B) 1900

(C) 1915

(D) 1916

[A*ns* – (C)]

10. गदर पार्टी की स्थापना किसने और कब की?

(A) गुरदयाल सिंह, 1916

(B) चंद्रशेखर आजाद, 1920

(C) लाला हरदयाल, 1913

(D) सोहन सिंह भाखना, 1918

[A*ns* – (C)]

11. 1915 में काबुल में भारत की अस्थायी सरकार का अध्यक्ष किसे बनाया गया था ?

(A) बरकतुल्ला को

(B) महेन्द्र प्रताप को

(C) लाला हरदयाल को

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (B)]

12. लखनऊ समझौता किस वर्ष हुआ ?

(A) 1916

(B) 1918

(C) 1920

(D) 1922 से भारत कब

[Ans – (A)]

13. महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका वापस आए ?

(A) 1913

(B) 1919

(C) 1915

(D) 1921

[Ans – (C)]

14. कामनबील तथा न्यू इंडिया का प्रकाशन किसने किया ?

(A) एनीबेसेंट

(B) बल्लभ भाई पटेल

(C) महात्मा गाँधी

(D) बाल गंगाधर तिलक

[Ans – (A)]

15. जालियाँवाला बाग हत्याकांड कब हुआ ?

(A) 13 अप्रैल 1919

(B) 14 अप्रैल 1919

(C) 15 अप्रैल 1919

(D) 16 अप्रैल 1919

[Ans – (A)]

16. जालियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में किसने " कैसर-ए-हिन्द" की उपाधि लौटा दिया था?

(A) बाल गंगाधर तिलक ने

(B) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने

(C) गाँधीजी ने

(D) रवींद्रनाथ टैगोर ने

[Ans – (C)]

17. रॉलेट ऐक्ट किस वर्ष पारित हुआ ?

(A) 1911 में

(B) 1919 में

(C) 1935 में

(D) 1947 में

[Ans – (B)]

18. रॉलेट कानून किस उद्देश्य से बनाया गया ?

(A) सरकारी नौकरियों में प्रवेश के लिए

(B) शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए

(C) कालाबाजारी रोकने के लिए

(D) क्रांतिकारी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए

[Ans – (D)]

19. जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए सरकार ने किस समिति का गठन किया था ?

(A) हंटर समिति

(B) डायर समिति

(C) मांटेग्यू समिति

(D) चेम्सफोर्ड समिति

[Ans – (A)]

20. तुर्की में खलीफा का पद किस वर्ष समाप किया गया ?

(A) 1920

(B) 1922

(C) 1924

(D) 1930

[Ans – (C)]

21. भारत में खिलापत आंदोलन कब और किस देश के शासक के समर्थन में शुरू हुआ ?

(A) 1920 तुर्की

(B) 1920 अरब

(C) 1920 फ्रांस

(D) 1920 जर्मनी

[Ans – (A)]

22. गांधीजी को 'महात्मा' की उपाधि किसने दी ?

(A) मोती लाल नेहरू

(B) लाला लाजपत राय

(C) रवीन्द्रनाथ टैगोर

(D) गोपाल कृष्ण गोखले

[Ans – (C)]

23 गांधीजी नें सर्वप्रथम किस अंग्रेजी नीति का विरोध किया ?

(A) नस्लवाद

(B) राजस्व

(C) प्रेस

(D) शिक्षा

[Ans – (A)]

24. चौरी चौरा वर्तमान भारत में किस राज्य में हैं ?

(A) बिहार में

(B) मध्यप्रदेश में

(C) उत्तर प्रदेश में

(D) आंध्र प्रदेश में

[Ans – (C)]

25. महात्मा गाँधी अपना राजनीतिक गुरु किसे मानते थे ?

(A) बालगंगाधर तिलक

(B) गोपालकृष्ण गोखले

(C) लाला लाजपतराय

(D) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

[Ans – (B)]

26. अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज्य' में गाँधीजी ने किस आंदोलन का उल्लेख किया है ?

(A) असहयोग आंदोलन

(B) सविनय अवज्ञा आंदोलन

(C) भारत छोड़ो आंदोलन

(D) सत्याग्रह आंदोलन

[Ans – (A)]

27. चौरी-चौरा कांड के बाद महात्मा गाँधी ने किस आंदोलन को वापस लिया

(A) असहयोग आंदोलन

(B) खिलाफत आंदोलन

(C) सविनय अवज्ञा आंदोलन

(D) भारत छोड़ो आंदोलन

[Ans – (A)]

28. असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के किस अधिवेशन में पारित हुआ ?

(A) सितंबर 1920, कलकत्ता

(B) अक्टूबर 1920, अहमदाबाद

(C) नवंबर 1920, फैजपुर

(D) दिसंबर 1920, नागपुर

[Ans – (A)]

29. महात्मा गाँधी ने किस पत्रिका का सम्पादन किया ?

(A) केसरी.

(B) मराठी

(C) यंग इंडिया

(D) बंगाली

[Ans – (A)]

30. सविनय अवज्ञा आंदोलन किस यात्रा से शुरू

हुआ?

(A) 1920, भुज

(B) 1930, अहमदाबाद

(C) 1930, दांडी

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

31. काँग्रेस ने किस तिथि को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाया?

(A) 31 दिसंबर, 1929 को

(B) 26 जनवरी, 1930 को

(C) 12 मार्च, 1930 को

(D) मार्च, 1932 को

[Ans – (A)]

32. नेहरू रिपोर्ट किस वर्ष प्रस्तुत किया गया?

(A) 1927 में

(B) 1928 में

(C) 1929 में

(D) 1931 में

[Ans – (A)]

33. साइमन कमीशन किस वर्ष भारत

आया था?

(A) 1919

(B) 1927

(C) 1928

(D) 1930

[Ans – (A)]

34. पूर्ण स्वराज्य की माँग का प्रस्ताव काँग्रेस के किस वार्षिक अधिवेशन में पारित हुआ?

(A) 1929, लाहौर

(B) 1931, कराँची

(C) 1933, कलकत्ता

(D) 1937, बेलगाँव

[Ans – (A)]

35. सविनय अवज्ञा आंदोलन कब शुरू हुआ?

(A) 1920

(B) 1930

(C) 1935

(D) 1942

[Ans – (A)]

36. इनमें से किसे बादशाह खान या सीमांत गाँधी कहा जाता है?

(A) महात्मा गाँधी

(B) आगा खान'

(C) खान अब्दुल गफ्फार खान

(D) सैयद अहमद

[Ans – (A)]

37. नमक कानून कब भंग हुआ?

(A) 5 अप्रैल, 1930 को

(B) 6 अप्रैल, 1930 को

(C) 7 अप्रैल, 1930 को

(D) 8 अप्रैल, 1930 को

[Ans – (A)]

38. गाँधीजी ने दांडी यात्रा किस तिथि को आरंभ की?

(A) 12 जनवरी, 1930 को

(B) 12 फरवरी, 1930 को

(C) 12 मार्च, 1930 को

(D) 12 अप्रैल, 1930 को

[Ans – (A)]

39. नमक कानून भंग करने के लिए गाँधीजी ने किस स्थान को चुना?

(A) दांडी

(B) भड़ाँच

(D) साबरमती

(C) अमरावती

[Ans – (A)]

40. चौकीदारी कर के विरोध में कहाँ आन्दोलन हुआ था?

(A) बिहार में

(B) पंजाब में

(C) उत्तर प्रदेश में

(D) गुजरात में

41. मैक्डोनाल्ड ने "सांप्रदायिक निर्णय" की घोषणा किस वर्ष की थी?

(A) 1930 में

(C) 1932 में

(B) 1931 में

(D) 1935 में

42. 1932 में पूना समझौता किनके बीच हुआ?

(A) गाँधी और अंबेदकर में

(B) गाँधी और जिन्ना में

(C) परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी में

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

43. किस समझौता को दिल्ली समझौता के नाम से जाना जाता है?

(A) गाँधी-इरविन समझौता

(B) गाँधी-अंबेदकर समझौता

(C) कांग्रेस-लीग समझौता

(D) कांग्रेस-समाजवादी समझौता

44. अखिल भारतीय किसान सभा का गठन कहाँ और कब हुआ?

(A) बिहटा, 1928

(B) सोनपुर, 1929

(C) लखनऊ, 1936

(D) पटना, 1937

[Ans – (A)]

45. गाँधीजी ने सत्याग्रह का पहला प्रयोग कहाँ किया था?

(A) अहमदाबाद में

(B) बारदोली में

(C) चंपारण में

(D) खेड़ा में

[Ans – (A)]

46. 'अखिल भारतीय किसान सभा' का गठन 1936 ई० में कहाँ हुआ था?

(A) बंबई

(B) इलाहाबाद

(C) पटना

(D) लखनऊ)

[Ans – (A)]

47. किसान दिवस किस दिन मनाया गया?

(A) 1 सितम्बर, 1936

(B) 2 सितम्बर, 1937

(C) 1 सितम्बर, 1938

(D) 2 सितम्बर, 1939

[Ans – (A)]

48. तिनकठिया प्रणाली किन पर लागू हुई थी?

(A) उद्योगपतियो

(B) व्यापारियों

(C) श्रमिकों

(D) किसानों

[Ans – (A)]

49. बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि किस किसान आंदोलन के दौरान दी गई?

(A) बारदोली

(B) अहमदाबाद

(C) खेड़ा

(D) चंपारण

[Ans – (A)]

50. 'ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन' कांग्रेस (AITUC) की स्थापना किस वर्ष हुई?-

(A) 1925

(B) 1920

(C) 1930

(D) 1922

[Ans – (A)]

51. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस के अध्यक्ष कौन थे?

(A) सरदार पटेल

(B) लाला लाजपत राय

(C) सुभाष चन्द्र बोस

(D) जवाहर लाल नेहरू

[Ans – (A)]

52. टाना भगत आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था?

(A) अएलूरी सीताराम राजू ने

(B) जतरा भगत ने

(C) गुदाथुर ने

(D) एम० एन० राय ने

[Ans – (A)]

53. खोंड विद्रोह कहाँ और कब हुआ था?

(A) बिहार, 1910

(B) उड़ीसा, 1914

(C) छोटानागपुर, 1917

(D) पश्चिम बंगाल, 1919

[Ans – (A)]

54. 1921 का मोपला विद्रोह किसके नेतृत्व में हुआ था?

(A) अएलूरी सीताराम राजू

(B) जतरा भगत

(C) गुंदा धुर

(D) अली मुसलियार

[Ans – (A)]

55. अल्लूरी सीताराम राजू कौन थे?

(A) एक संत

(B) उग्रवादी

(C) आंध्र का आदिवासी नेता

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

56. अली मुसालियार ने किस विद्रोह का नेतृत्व "किया था?

(A) रंपा विद्रोह

(B) खोंड विद्रोह

(C) संथाल विद्रोह

(D) मोपला विद्रोह

[Ans – (A)]

57. रम्पा विद्रोह कब हुआ?

(A) 1916

(B) 1917

(C) 1918

(D) 1919

[Ans – (A)]

58. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई ?

(A) 1885

(B) 1890)

(C) 1895

(D) 1900

[Ans – (A)]

59. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किसने की थी?

(A) ए०ओ० ह्यूम

(B) लिटन

(C) रिपन

(D) गोलवरकर

[Ans – (A)]

60. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष कौन थे?

(A) बाल गंगाधर तिलक

(B) व्योमेश चन्द्र बनर्जी

(C) लाला लाजपत राय

(D) लाला हरदयाल

[Ans – (A)]

61. बंबई में कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना कब हुई?

(A) 1933

(B) 1934

(C) 1935

(D) 1926

[Ans – (A)]

62. किसने 1920 ई० में ताशकंद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की?

(A) लाला लाजपत राय

(B) एम० एन० जोशी

(C) सत्यभक्त

(D) एम० एन० राय

[Ans – (A)]

63. बिहार समाजवादी दल की स्थापना किसने की थी?

(A) जयप्रकाश नारायण

(B) राजेन्द्र प्रसाद

(C) श्रीकृष्ण सिंह

(D) विनोबा भावे

[Ans – (A)]

64. 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' की स्थापना कब हुई थी ?

(A) 1927

(B) 1928

(C) 1926

(D) 1929

[Ans – (A)]

64. 'फारवर्ड ब्लाक' की स्थापना किसने

(A) जवाहर लाल नेहरू

(B) महात्मा गाँधी

(C) सुभाष चन्द्र बोस

(D) जय प्रकाश नारायण

[Ans – (A)]

66. मुहम्मद अली जिन्ना ने अपनी "14 - सूत्री माँग " किस वर्ष प्रस्तुत की थी?

(A) 1928 में

(B) 1929 में

(C) 1930 में

(D) 1940 में

[Ans – (A)]

67. किस अधिनियम के द्वारा मुसलमानों को पृथक प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया?

(A) 1909

(B) 1919

(C) 1926

(D) 1935

[Ans – (A)]

68. 1905 ई० में बंगाल विभाजन किसके समय में हुआ ?

(A) लॉर्ड कर्जन

(B) लॉर्ड रिपन

(C) लॉर्ड लिटन

(D) लॉर्ड डलहौजी वर्ष

[Ans – (A)]

69. ऑल इंडिया मुलिम लीग की स्थापना किस हुई?

(A) 1885

(B) 1905

(C) 1906

(D) 1911

[Ans – (A)]

70. अलीगढ़ आंदोलन का नेतृत्व किसने किया?

(A) अब्दुल लतीफ ने

(B) आगा खाँ ने

(C) सैयद अहमद खाँ ने

(D) समीउल्ला खाँ

[Ans – (A)]

71. अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज की स्थापना किसने की थी?

(A) आगा खाँ

(B) सर सैयद अहमद खाँ

(C) अब्दुल लतिफ

(D) मोहम्मद अली जिन्ना

[Ans – (A)]

72. स्वराज पार्टी के अध्यक्ष कौन थे?

(A) मोतीलाल नेहरू

(B) बाल गंगाधर तिलक

(C) चितरंजन दास

(D) एनीबेसेंट

[Ans – (A)]

73. 'वेदों की ओर लौटो' नारा किसने दिया?

(A) राम कृष्ण परमहंस

(B) स्वामी विवेकानंद

(C) स्वामी दयानंद सरस्वती

(D) इनमें से कोई नहीं

[Ans – (A)]

74. हिन्दू महासभा की स्थापना कब और किसके द्वारा की गई?

(A) 1875, दयानंद सरस्वती

(B) 1915, मदन मोहन मालवीय

(C) 1923, लाला लालचंद

(D) 1925, के०बी० हेडगेवार

[Ans – (A)]

75. भारत छोड़ो आंदोलन का प्रसिद्ध नारा क्या था?

(A) इंकलाब जिंदाबाद

(B) करो या मरो

(C) फूट डालो और शासन करो

(D) वन्दे मातरम

[Ans – (A)]

76. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना कब और किसने की?-

(B) के० बी० हेडगेवार 1925

(A) गुरु गोलवलकर 1928

(C) चितरंजन दास 1929

(D) लालचंद 1930

[Ans – (A)]

77. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना कब हुई?

(A) 1923 ई०

(B) 1925 ई०

(C) 1934 ई०

(D) 1939 ई०

[Ans – (A)]